अध्याय 3

संगीतकारों की जीवनियाँ

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे

आकाश में सैंकड़ों तारे होते हैं मगर उजाला केवल चंद्रमा से होता है। उसी प्रकार कलाओं के विभिन्न क्षेत्र में हज़ारों व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार साधना और निर्माण करते है। संगीत के क्षेत्र में ऐसा ही स्थान पंडित विष्णुनारायण भातखंडे जी को प्राप्त है।

भातखंडे जी का जन्म 10 अगस्त 1860 को कृष्ण जन्माष्टमी के दिन बंबई में हुआ था। संगीत के प्रति रूचि उनमें बचपन से ही थी। उनकी मॉ जो भजन उन्हें सुनाती थी वे उसे उसी प्रकार सुनाकर सभी को प्रसन्न कर देते थे। संगीत की शिक्षा उन्हें अपनी मॉ से विरासत में मिली।

भातखंडे जी ने बी.ए., एल.एल.बी. की उच्च शिक्षा प्राप्त की। इसके साथ ही संगीत से प्रेम होने के कारण वे संगीत की शिक्षा भी प्राप्त करते रहे। छात्र अवस्था में ही वे सितार और बॉसुरी वादन में निपुण हो गये थे। सन् 1884 में वह उत्तेजित मंडली के सदस्य बने जहॉ एक से एक संगीताचार्य संगीत साधना में लगे हुये थे। यह संगीत संस्था बंबई के धनिकों द्वारा संचालित थी और प्रसिद्ध ध्रुपद गायक श्री राव बुवा बेलगॉवकर, ख्याल गायक अली हुसैन खॉ गणपति बुआ आदि इस संस्था की शोभा थे। इन्ही दिनों सुविख्यात संगीतकार मोहम्मद अली और उनके पुत्र मुशताक अली भी बंबई में निवास करते थे। भातखंडे जी को इन श्रेष्ठ कलाकारों के संपर्क में आने का अवसर मिला और उन्होने इनसे बड़ी संख्या में ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, तरारा आदि का ज्ञान प्राप्त किया।

सन् 1887 में उन्होने बंबई में वकालत शुरू की पर उन्होने अनुभव किया कि संगीत ही उनका वास्तविक क्षेत्र है और उन्होने वकालत को तिलाजंलि दे दी। सन् 1890 में उन्होंने देश के संगीत तीर्थों की यात्रा की और बहुत बड़े– बड़े संगीतकारों से मिले।

इस अवधि में उन्होंने प्राचीन भारतीय संगीत का गहराई से अध्ययन किया, उस्तादों की चरणरज माथे पर लगाई और संगीत के क्षेत्र में शोध और अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने प्राचीन संगीत ग्रंथो की खोज की, अध्ययन किया और हिंदुस्तानी संगीत पद्धति की सभी धाराओं व उपधाराओं को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया। भातखंडे जी के समय में किसी संगीतकार की कला को सुरक्षित रखने के लिये आधुनिक उपकरणों का विकास नही हुआ था। उन दिनों संगीत को लिखने और छाप सकने के बारे में कोई सुविचारित रूप प्रचलित नहीं था। भातखंडे जी ने इस दिशा में पहल की और अपना सारा जीवन इसमें बिता दिया। उन्होंने सदियों से प्रचलित राग– रागिनियों को एकत्र किया। उनकी बारीकियॉ सीखीं और बडी संख्या में बंदिशें लिपिबद्ध कीं। उन्होंने विभिन्न गायकों की खास– खास चीजो़ं का संकलन किया, विश्लेषण किया और मान्यताऍं स्थापित कीं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता हैं कि उन्होंने संगीत

को अपनी प्रतिभा में वैज्ञानिक रूप दिया और उसके मापदंड निश्चित किये। उन्होंने संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी में शोध– ग्रंथों की रचना की। उनके प्रमुख ग्रंथ इस प्रकार हैः

संस्कृत : 'लक्ष्य संगीत', 'अभिनव रागमंजरी', 'ताल लक्षणम्' ।

हिंदीः 'हिंदुस्तानी क्रमिक पुस्तकमालिका' (भाग–6), 'लक्षणगीत संग्रह' (भाग–3), 'भातखंडे संगीत शास्त्र' (भाग–4), 'स्वरमालिका संग्रह' तथा 'गीतमालिका' ।

अंग्रेजीः 'A Short Historical Survey of North Indian Music, and 'Comparative Study of Music System of 15, 16, 17 and 18th Century'.

हिंदुस्तानी संगीत पद्धति (क्रमित पुस्तकमालिका) में प्रत्येक राग का इतिहास, आलाप, स्थायी, अंतरा, आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

संगीत सम्मेलनों की शुरूआत

भातखंडे जी के ग्रंथ प्रकाशित होते ही उनकी ख्याति सारे देश में फैंल गई। उनके सफल प्रयासों के समाचार सब संगीत प्रेमी राजाओं तक पहुँचे तब उन्होने भातखंडे जी को अपने यहॉ आमंत्रित किया। 1907 ईं. में बड़ौदा नरेश की सहायता से संगीत सम्मेलन का आयोजन हुआ। उस सम्मेलन में अखिल भारतीय संगीत एकेडमी स्थापित करने का प्रस्ताव पास हुआ। बाद में 1918 ईं. में दिल्ली में, 1919 ई. में बनारस में तथा 1925 ई. में लखनऊ में संगीत सम्मेलन हुआ। इन अवसरों पर देस के प्रमुख संगीतकार एक मंच पर एकत्रित होते थे और संगीत संबधित समस्याओं पर विचार करते थे और अपनी कला का प्रदर्शन करते थे।

भातखंडे जी ने महाराजा ग्वालियर से संगीत विद्यालय की स्थापना के बारे में विचार– विमर्श किया। उन्होंने संगीत विद्यालय का स्वरूप स्थापित किया और परीक्षा प्रणाली निर्धारित की। राज्य के संगीतकारों का चयन करके उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई, जिससे वे ठीक प्रकार से शिक्षा दे सकें। इसके लिये भातखंडे जी ने संगीत की पाठ्य– पुस्तकें तैयार कीं।

लखनऊ में आयोजित संगीत सम्मेलन के फलस्वरूप "Marris College of Hindustani Music" की स्थापना हुई थी जो आज 'भातखंडे संगीत विद्यालय' के नाम से प्रसिद्ध है। सरजू और राजगोपाल जैसे सांरगी वादक, गिरिजा और संतु जैसे तबला वादक, साधना बोस व पहाड़ी सान्याल जैसे अखिल भारतीय ख्याति के कलाकार इसी विद्यालय की देन है।

भातखंडे जी का गायन और वादन दोनों पर अच्छा अधिकार था। समस्त रागों को दस थाट के अंतर्गत वर्गीकृत करके उन्होने नवीन थाट राग पद्धति का आविष्कार किया।

भातखंडे जी व्यक्ति नहीं स्वयं में एक संस्था थे क्योंकि जो कार्य उन्होंने संगीत के उत्थान के लिये अकेले किया वह विश्व भर में अविस्मरणीय रहेगा। उन्होंने अपना सारा जीवन संगीत को उच्च शिखर पर पहुँचाने में लगा दिया। पं. विष्णु नारायण भातखंडे जी का स्वर्गवास 19 नवंबर 1936 को हुआ।

Pt. Vishnu Narayan Bhatkhande was a unique personality endowed with scholarship, creativity, poetic sensibilities, capacity for patient and hard work and devotion for the Indian musical tradition and above all humility. Bhatkhande began his work with collection of hundreds of compositions from different Gharanas, analysed them and formulated the theory of Indian music underlying an easy and expressive notation system for Hindustani Music and introduced a new method of collective education in music and wrote text books and gave music the form and

shape on academic subject. In the last we must say, "Pandit Bhatkhande's contribution to Indian Music is very great".

पंडित रवि शंकर

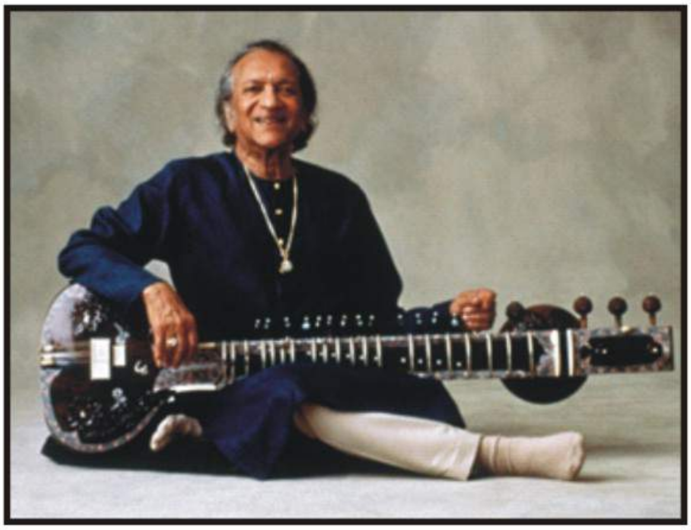

विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार करने के लिये जो स्थान महात्मा बुद्व, स्वामी विवेकानन्द, रामतीर्थ आदि महापुरूषों को प्राप्त है, वही स्थान पंडित रविशंकर जी को विदेशों में भारतीय संगीत का प्रचार करने के लिये प्राप्त होता है । आप ऐसे रवि थे जिन्होंने शास्त्रीय संगीत की किरणों को विदेशों में पहुंचाया और
भारत का मस्तक उंचा किया । कहा जाता है कि भारतीय संगीत को विदेशों में लोकप्रिय बनाने का सबसे बड्रा श्रेय आपको ही था । आप मेहर घराने के उस्ताद अलाउद्दीन खां के प्रमुख शिष्य थे ।

जन्म तथा परिवार परिचय

अन्तर्राष्ट्रीय विख्यात कलाकार पंडित रविशंकर जी का जन्म सात अप्रेल सन् 1920 ई0 को वाराणसी में हुआ । आपके पिता का नाम डॉ0 श्याम शंकर था जो अपने समय के अच्छे विद्वान थे । उन्होंने इंग्लैंड से बेरिस्टर और जेनेवा विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी । सुसंस्कृत वातावरण में पंडित रविशंकर जी का जन्म हुआ ।

चार भाईयों में आप सबसे छोटे और पंडित उदय शंकर जी सबसे बडे थे । आपके पिता तथा पं0 उदयशंकर जी को नृत्य में बडी रूचि थी । आपकी संगीत शिक्षा नृत्य से प्रारंभ हुई थी । कुछ वर्षो तक आप अपने बडे भाई पं0उदयशंकर जी की मंडली में नृत्य करते रहे और मण्डली के साथ विदेशों का भी भ्रमण किया । वहीं आपका परिचय उस्ताद अलाउद्दीन खां से सन 1935 में हुआ । वे कभी–कभी अवकाश के समय रविशंकर जी को गायन और सितार की शिक्षा दिया करते थे । उन्होंने पंडित जी को नृत्य को छोडकर सितार साधना की सलाह दी , किन्तु उस समय पंडित जी को ये बात जंची नहीं और नृत्य में लगे रहे । इस तरह कुछ वर्ष बीत गये किन्तु उनकी रूचि नृत्य से धीरे–धीरे कम होने लगी । सन् 1938 में आपने नृत्य छोड दिया और उस्ताद अलाउद्दीन खां साहब के पास मेहर सितार सीखने के लिये जा पहुंचे ।

सन् 1938 से ही आपकी संगीत की वास्तविक शिक्षा आरंभ हुई । आपने खां साहब के चरणों में छह वर्षों तक बडी लगन, परिश्रम और श्रद्वा से संगीत की शिक्षा प्राप्त की और अलाउद्दीन खां ने भी पुत्रवत स्नेह के साथ दिल खोलकर शिक्षा दी। सोने और सुहागे का सहयोग हुआ और एक कलाकार का रत्न का जन्म हुआ ।

पंडित जी का विवाह सन् 1941 में उस्ताद अलाउद्दीन खां की पुत्री अन्नपूर्णा से हुआ जो बहुत अच्छा सुरबहार बजाती थी, जिनकी शिक्षा खुद अपने पिता खां साहब से हुई थी । वो एक कुशल संगीतज्ञ थीं ।

वादन शैली

पंडित जी के वादन में एक और सागर की गंभीरता तो दूसरी और चपलता भी दिखायी देती है । आपके स्वरों की शुद्वता लगाव और माधुर्य अद्वितीय है । स्वर के साथ लय व ताल पर पूर्ण नियंत्रण आपकी खास विशेषता थी । आपके आलाप जोड में वीना अंग की छाप स्पष्ट दिखाई पडती है । आलाप में आप जब खरज और लरज के तारों पर जब पहुंचते हैं, तब ऐसा मालूम पडता है कि अथाह सागर की अनन्त धारा प्रवाहित हो रही है । अपनी वादन शैली में आप परम्परागत नियमों का पालन करते हैं । पंडित रविशंकर पाश्चात्य संगीत ,शास्त्रीय तथा विभिन्न लोकसंगीत का भी सूक्ष्म ज्ञान रखते हैं । इन सभी का दनके वादन में समन्वय दिखाई देता है। रविशंकर जी सितार पर विभिन्न तालों जैसे त्रिताल, रूपक, पंचमसंवादी, एकताल आदि में भी शास्त्रीय वादन प्रस्तुत करते थे । इसके अलावा, 9 मात्रा, 11 मात्रा, 8 1/2मात्रा, 6मात्रा आदि में भी वादन प्रस्तुत करते थे। आपका प्रदर्शन बडा आनंददायक होता था। कण, मुर्की, जमजमा का प्रयोग से आपकी वादन शैली निखर उठती थी। झाले के विविध प्रयोग में बडा वैचित्र्य है । इस तरह आपकी वादन शैली में, कल्पना और विकास है ।

स्वभाव

पंडित जी स्वभाव के सरल, मृदुभाषी और बहुत मिलनसार थे । सभी छोटे बडों का प्रेम से स्वागत करते थे।

संगीत के क्षेत्र में योगदान और संगीत सेवा

पंडित रविशंकर जी ने भारतीय संगीत में आश्चर्यजनक उन्नति की । सन् 1949 में पंडित जी दिल्ली में ऑल इंडिया रेडियो में डायरेक्टर के पद पर नियुक्त हुये । आपने आकाशवाणी के लिये वाद्धवृन्द की रचनायें की तथा वाद्धवृन्द के प्रमुख संचालक के पद पर भी कार्य किया । आपने यूरोप के कई देशों और शहरों, इंग्लैण्ड ,जर्मनी, बेल्जियम, होलैण्ड, अमेरिका, फ्रांस, नार्वे, कनाडा आदि में सितार वादन की प्रस्तुति दी । रेडियो और टेलीविजन पर संगीत संबंधी वार्तायें और कार्यक्रम दिये । पंडितू जी ने भारतीय वाद्यवृन्द के स्तर के स्वर को बहुत उंचा किया और उसे समृद्वशाली बनाया । आपने अपने वाद्धवृन्द में विदेशी वाद्धों को भी रखा, किन्तु भारतीय वाद्धो को प्रधानता दी । आपने कुछ फिल्मों में संगीत निर्देशन का काम किया जैसे काबुलीवाला, गोदान, अनुराधा आदि। आपने कई नवीन रागों की रचना की, जिसमें से रसिया का रिकार्ड बडा ही मधुर है । 1962 में किन्नर स्कूल ऑफ म्यूजिक की स्थापना की ।

पंडित रविशंकर जी ने रागों में नये प्रयोग करके नये रागों की रचना की, जैसे तिलक श्याम, नट भैरव, जन सम्मोहनी, जोगेश्वरी, कामेश्वरी, परमेश्वरी आदि । आपने कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं 1.My life My music 2. राग अनुराग (बंगला में) ।

आपने दिल्ली में भारतीय कला केन्द्र की स्थापना की । सन् 1967 में भारत सरकार ने उन्हें पदमभूषण की उपाधि , सन् 1968 में केलिफोर्निया विश्वविद्धालय ने डॉक्टर ऑफ फाईन आर्ट की मानद उपाधि तथा विश्व भारती ने हॉन डाक्टरेट से सम्मानित किया । रविशंकर जी को 1990 में भारतीय संगीत की सेवा हेतु तीसरा स्पिरिट ऑफ फ्रीडम पुरूस्कार प्रदान किया गया ।

बडे दुःख के साथ कहना पड रहा है कि अंर्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त इस महान कलाकार का हृदय रोग के कारण 92 वर्ष की उम्र में 11 दिसम्बर 2012 को उनका देहांत हो गया । उनके निधन से संगीत जगत में बडी क्षति हुई, जिसकी भरपाई होना मुश्किल है ।

निखिल बनर्जी

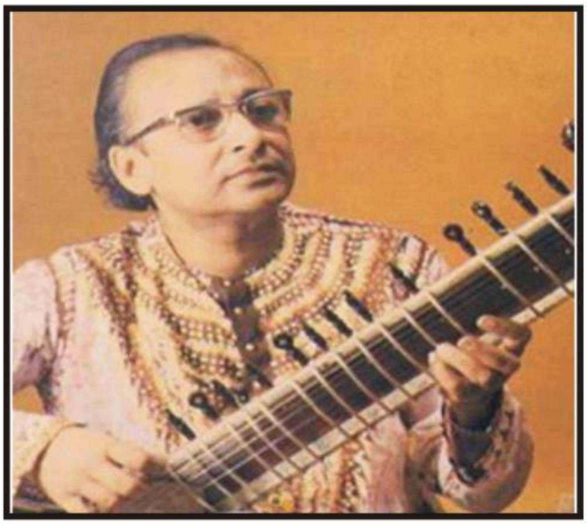

आधुनिक सितार वादकों में श्री निखिल बनर्जी का नाम अग्रणी है ।श्री निखिल बनर्जी का जन्म 14 अक्टूबर,1931 में कलकत्ता में हुआ। आपके पिता का नाम श्री जितेन्द्र नाथ बनर्जी था । ये बहुत अच्छे संगीतज्ञ और बहुत सुरीले थे। आपका व्यक्तित्व अन्य कलाकारों से भिन्न था । आपको रेडियो, अखबार में साक्षात्कार देना बिल्कुल पसंद नहीं था। वे अपनी प्रसिद्वी सितार वादन के जरिये ही चाहते थे । आप स्वभाव से जितने सरल थे उतने ही सितार वादन में क्लिष्ट काम करते थे ।

संगीत शिक्षा

आपकी प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता श्री जितेन्द्र नाथ जी से ही हुई, इसके बाद इन्होंने गौरीपुर के महाराजा से सीखा । आप महाराज के सहयोग से उस्ताद अलाउद्दीन खां के शिष्य बन गये । आपने जब कलकत्ता में अलाउद्दीन खां का सरोद सुना तभीसे निश्यच किया किवे सितार की शिक्षा अलाउद्दीन खां से ही प्राप्त करेंगे वरना सितार बजाना छोड देंगे । आपने वीरेन्द्र राय चौधरी से ध्रुपद–धमार की गायकी सीखी । खां साहब ने भी बडी लगन व स्नेह के साथ इनको संगीत शिक्षा दी । आपने भी निष्ठा और भक्ति के साथ सितार की शिक्षा ली ।

योगदान व संगीत कार्य

आपने देश के कई अखिल भारतीय सम्मेलनों में भाग लिया और आपके सितार वादन की प्रशंसा हुई । आपने भारतीय कला मण्डल के साथ जाकर विदेशों में भी संगीत के कार्यक्रम दिये । आप अच्छे – अच्छे संगीत सम्मेलनों में आमंत्रित किये जाते रहे हैं और आप जहां भी कार्यक्रम देने हेतु गये वहां भारतीय की प्रतिष्ठता ही बढी है । आपका अधिकतर समय संगीत साधना में ही बीतता था ।

वादन शैली

निखिल बनर्जी की अपने आप में एक विशिष्ठ वादन शैली है । आपके वादन शैली में कभी–कभी सरोद की छाप भी पडती है । क्योंकि आप अलाउद्दीन खां और उनके पुत्र अली अकबर खां के शिष्य रहे हैं । आपके वादन में विलंबित लय में स्वर का आलाप, जोड, तान तोडे आदि तैयारी बडी अद्वितीय है । आपके वादन की यह विशेषता थी की आलाप से लेकर झाले तक एक समानता बनी रहती थी । राग में स्वर का लगाना , मींड का काम, तीनों सप्तकों का बराबर प्रयोग करते हुये आलाप चारी करते थे ।तानों के विभिन्न प्रकार तथा मिजरा में भी विभिन्न बोलों का प्रयोग करते थे । विभिन्न लयकारी व तिहाईयों का प्रयोग करते थे। तालों में झपताल, धमार, आडा चौताल, 9मात्रा, 11मात्रा आदि तालों में बजाने की क्षमता रखते थे । आपके द्वारा बजाये गये रागों के रिकार्डस व कैसेट्स आज भी उपलब्ध है, जो रेडियो पर भी कभी–कभी सुनाई देते हैं ।

भारतीय संगीत जगत के इस महान कलाकार का निधन 27 जनवरी 1986 को हो गया ।

इनायत खां

सितार के विकास और प्रचार में स्व0 उस्ताद इनायत खां का स्थान अद्वितीय है । सितार वादन उनके वंश में परम्परा से चली आ रही है । उनके पिता स्व0इमदाद खां एक अच्छे सितार वादक थे और पुत्र विलायत खां आधुनिक समय के श्रेष्ठ सितार वादकों में गिने जाते हैं । कलकत्ता में सितार और सुरबहार का प्रचार इनायत खां ने इतना अधिक कर दिया था कि घर–घर में सितार और सुरबहार बजाया जाने लगा । उन्होंने अनेक योग्य शिष्य तैयार किये । उल्लेखनीय नाम है–उन्हीं के पुत्र उस्ताद विलायत खां ,पं0 ध्रुव तारा जोशी और श्रीमती रेणुका साह।

इनायत खां पुरानी परम्परा के होते हुए भी रंजकता वृद्वि के लिये प्रयोगवादी दृष्टिकोण अपनाते रहे । बजाते – बजाते विवादी स्वरों का प्रयोग इतनी सुंदरतात से कर जाते थे कि श्रोतागण मन्त्रमुग्ध हो जाते थे । काफी में तीव्र मध्यम, भूपाली में शुद्व मध्यम और यमन में कोमल रिषभ इतनी सुन्दरता से प्रयोग करते थे कि उनके वादन में चार चांद लग जाते थे । एक बार किसी जिज्ञासु ने उनसे पूछा कि जब काफी में तीव्र मध्यम नहीं लगता है तो आप क्यों लगाते हैं उन्होंने उत्तर दिया कि जस स्वर के प्रयोग ने मुझे सात सोने के मैडल दिये हैं उसे मैं क्यों न प्रयोग करूं । इसे सुनकर प्रश्नकर्ता निरूत्तर हो गये ।

स्व0 इनायत खां का जन्म 16 जून 1895 को इटावा में हुआ । उनको सितार की शिक्षा अपने पिता स्व0 इमदाद खां से प्राप्त हुई । कुछ दिनों तक अपने भाई वहीद खां के साथ इन्दौर दरबार में रहने के बाद कलकत्ता चले गये , जहां उनको बडा सम्मान मिला ।गौरीपुर रियासत के बृजेन्द कृष्णराय चौधरी से आपका सम्पर्क हुआ। उन्होंने इनायत खां को गौरीपुर रियासत में नियुक्त कर दिया, जहां संगीत के अन्य अनन्यतम साधक थे । उल्लेखनीय नाम है सरोद वादक अमीर खां, गायक विपिन चन्द्र चटर्जी , इसराज वादक शीतल प्रसाद मुखर्जी आदि। सन 1924 से वे गौरीपुर में स्थायी रूप से रहने लगे । वहां सन 1924 में प्रसिद्व सितार वादक बिलायत खां का जन्म हुआ । वहां रहते हुये भीआप अनेक संगीत सम्मेलनों में भाग लेने जाते । आपके कई संताने हुई , किन्तु उनमें से केवल दो सन्ताने एक पुत्र और एक पुत्री जीवित रहीं । जिस समय पुत्र विलयत खां केवल 14 वर्ष के थे उस समय इनायत खां की मृत्यू हो गई । अंतिम बार वे इलाहबाद संगीत सम्मेलन में भाग लेने आये थे । वहां जाकर ज्वर से इतने पीडित हो गये कि अपना कार्यक्रम भी नहीं दे सके । शीघ्र ही अपने घर को लौट पडे । रास्ते में ही अचेत हो गये, किसी प्रकार कलकत्ता पहुंचे और दूसरे दिन 11 नवम्बर 1938 को परलोक सिधार गये ।

मसीत खां

जयपुर के उस्ताद मसीत खां अपने जमाने के निष्णात तंत्रीवादक हुए हैं । इनके पिता फिरोज खां भी माने हुए संगीतकार थे । मसीत खां ने मूल त्रितंत्री (सहतार या सितार) में चार तार और जोड कर उसे सप्ततंत्री वाद्य का नया रूप दिया । पर्दों की संख्या 23 तक बढाकर सितार को अचल ठाठ का बना दिया। उन्होंने एक नई वादन शैली का आविष्कार किया जो जयपुर घराने के प्रचलित मसीतखानी बाज को, सेनिया बाज या पश्चिमी बाज का प्रतिनिधित्व करती है । आपने ध्रुपद–धमार के आधार पर बिलंबित गत का एक नया स्वरूप इजाद किया जिसे वर्तमान काल में भमसीतखानी गत कहते हैं। इसे दिल्ली या पश्चिमी बाज भी कहा जाता है ।

मसीत खां ने दायें हाथ से बनजे वाले बोलों पर जोर दिया। यद्धपि बायें हाथ के बोलों को अधिक प्रमुखता दी। बायें हाथ से अब ख्याल की मुरकियां और कभी दो स्वरों की मीड ली जाने लगी। मसीत खां ने न

केवल सितार को आधुनिक रूप दिया वरन अपनी गतों का निर्माण किया । मसीत खां के समय से पूर्व तंत्री वाद्यों मे वीणा और गायन शैलियों में ध्रुपद की प्रधान था । सितार के जन्म के समय ख्याल , कव्वाली और तबले का जन्म हो चुका था । वीणा का आलाप अंग , सुरबहार तथा गायन अंग सितार पर प्रयुक्त होने लगा था और तभी मसीत खां ने सितार वादन शैली मसीतखानी गत का आविष्कार किया । गत की बंदिश यद्धपि मूल रूप से गान से ही प्रभावित थी किन्तु मिजराब के विशेष प्रयोगों के कारण गत की रचना गायन से भिन्न रूप मे होने लगी । इन गतों में मसीत खां ने विलंबिल ख्याल के अनुकरण से ही सितार में बजने योग्य मसीतखानी गतों की रचना की ।

उस्ताद मसीत खां के सुपुत्र बहादुर खां भी एक अच्छे संगीतकार हुए और बहादुर खां के पौत्र रहीम खां सेनिया घराने के कीर्तिमान वादक रहे । आपके समय तक सितार को एक साधारण बाजा समझाा जाता था, आपने ही इसे परिष्कृत किया ।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र. 1 विलंबित गत (मसीतखानी) के आविष्कारक कौन हैं।
अ) पं. रविशंकर ब) निखिल बनर्जी स) मसीत खां

प्र. 2 निखिल बनर्जी का जन्म हुआ
अ) कोलकता ब) वाराणसी स) मुम्बई

प्र. 3 भारतीय संगीत को विदेशों में लोकप्रिय बनाया
अ) पं. रविशंकर ब) मसीत खां स) निखिल बनर्जी

प्र. पं. विष्णु नारायण भातखण्डे का जीवन परिचय लिखते हुये संगीत के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियां तथा संगीत सेवा आदि का विस्तृत विवरण दीजिये

प्र. 2 निम्नलिखत सितार वादकों का जीवन परिचय, संगीत जगत में योगदान एवं वादन शैली आदि का विस्तृत वर्णन कीजिये ।
1. पं. रविशंकर 2. निखिल बनर्जी 3. मसीत खां 4. इनायत खां